https://archive.org/details/bk685/page/n0/mode/1up

2012 Before -Shanti Paigam -Acharya Vishnudev Pandit (685)

All Items on https://archive.org/details/realpatidar

Full Library on https://realpatidar.com/library

ઈશ્વર એક જ છે

ૐ

ધર્મ (દીન) એક જ છે

शान्ति पैग़ाम

संकलन कर्ता :

स्वर्गीय आचार्य विष्णुदेव पंडित
आचार्य डॉ. रजेन्द्रप्रसाद मिश्र
एस. अब्दुल्लाह तारिक

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n1/mode/1up

Real Patidar Library

https://www.realpatidar.com/library

This book/literature/article/material may be used for research, teaching, and private study purposes. Any substantial or systematic reproduction, redistribution, reselling, loan, sub-licensing, systematic supply, or distribution in any form to anyone is expressly forbidden.

The library does not give any warranty express or implied or make any representation that the contents will be complete or accurate or up to date. The library shall not be liable for any loss, actions, claims, proceedings, demand, or costs or damages whatsoever or howsoever caused arising directly or indirectly in connection with or arising out of the use of this material.

Full terms and conditions of use: http://www.realpatidar.com

About Real Patidar books

Real Patidar's mission is to organize the information on Satpanth religion, which is a Nizari Ismaili sect of Shia branch of Islam, and to make it universally accessible and useful. Real Patidar Books helps readers discover the material on Satpanth online while helping authors and researchers in their studies. You can know more by visiting http://www.realpatidar.com

You can resize and move this box in any PDF Application like Adobe Acrobat Reader.

No specific pages. See whole book.
References by: RealPatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n2/mode/1up

realpatidar.com

ઈશ્વર એક જ છે

ૐ

ધર્મ (દીન) એક જ છે

शान्ति पैग़ाम

संकलन कर्ता :

स्वर्गीय आचार्य विष्णुदेव पंडित
आचार्य डॉ. रजेन्द्रप्रसाद मिश्र
एस. अब्दुल्लाह तारिक

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n3/mode/1up

realpatidar.com

प्रस्तावना

आज प्राय: यह समझा जाता है कि सभी धर्मों अर्थात् यहूदियत ईसाईयत और इस्लामकी परंम्परायें ओर शिक्षाएं परस्पर मिलती जुलती हैं। परन्तु असामी धर्मो जैसे सनातन धर्म से वे सर्वथा भिन्न हैं। इस दुखद गलतफहमी का कारण यह है, कि समाज में ऊपरी मित्रता और सौहार्द रखने वाले विभिन्न धर्म अनुयायी भी न केवल एक दूसरे के धर्म परंपराओं से अनभिज्ञ हैं बल्कि स्वयं अपने तथा कथित धर्मो के बारे में भी कुछ रीति रिवाजों और दन्तकथाओं के सिवा कुछ नहीं जानते।

हम सब जानते हैं कि यह समग्र ब्रह्माण्ड की रचना के पीछे कोई (गोड) परम शक्ति बुद्धि कार्य कर रही है। जिसे हम अल्लाह या परब्रह्म या गोड के नाम से जानते है। समग्र ब्रह्मांड में एक संवादिता-हारमोनी नजर आती है। उसी परम शक्ति-अल्लाह-परब्रह्म के जो सनातन शाश्वत नियम हैं उसीसे समग्र ब्रह्मांड संचालित हो रहा है। हमें भी अपने जीवनमें संवादिता-हारमोनी लानी हो और यह विश्व समाज को एक विश्व कुटुंब बनाना हो तो उसी एक परम शक्ति अल्लाह-परब्रह्म-गोड के जो सनातन शाश्वत नियम, जो हमारे मूल धर्म ग्रंथो में हैं। उन्ही का निष्काम भाव न केवल अध्यन करना होगा बल्कि हमारे विचार, वाणी ओर व्यव्हारमे भी लाना होगा।

इस्लाम का यह दावा है कि वह सनातन धर्म (अरबी भाषा में दीने-ए-कय्यिम) है। इस्लामी परंपरा के अनुसार प्रथम ईश-दूत ह आदम (स्वयंभू मनु) भारत में उतारे गए। जाहिर है कि ईश धर्म ग्रंथ की शृंखला का पहला संस्करण भी इसी देशम आया जहा से ईश दूतो (पैगम्बरो) की श्रुखला का प्रारंभ हुआ। इश्वरीय ग्रन्थो की श्रुखला का अन्तिम संस्करण कुरआन यह बताता है कि :

नि:सन्देह यही (कुरआन) आदि ग्रंथो (वेदो) में (भी) है। (26:196)

विश्व के इन दो महान धर्म / सनातन और इस्लामका तुलनात्मक अध्ययन कुरआन के इस दावे को अक्षरश: सिद्ध करता नजर आता है। प्रस्तुत पुस्तिका में ईश वाणी के दो पवित्र संस्करणों, वेद और कुरआन की समानताओं की एक झलक दर्शाई गई है। आशा है, धार्मिक उन्माद के इस समय में यह प्रयास **शान्ति पैग़ाम** की एक नई ज्योति जलाएगा। हमें विश्वास है कि अज्ञात पूर्व मानवजाति को मिलने वाली वेदवाणी और उसके एक लम्बे अन्तराल के बाद अवतरित होने वाले कुरआन में ये अद्भूत समानताएं किसी भी सुलझे हुए मास्तिष्क को यह सोचने पर मजबूर कर देगी कि इन दोनों वाणियो का मुख्य स्रोत एकही - एक अल्लाह-परब्रह्म !

शुभेच्छु : स्वर्गीय आचार्य विष्णुदेव पंडित
आचार्य डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
एस. अब्दुल्लाह तारीक

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n4/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
यस्तन्न वेद किमृचा क़रिष्यति जो उस ब्रहम को नहीं जानता वह वेद से क्या करेगा। (ऋग. 1:164:39)	*युज़िल्लु बिही कसीरंव-व यह्दी बीहिकसीरन् - व मा युज़िल्लु बिही इल्लल् - फ़ासिक़िन* वह अल्लाह इसी (कुरआन) द्वारा अनेकों को पथभ्रष्ट पाता है और इसी से वह अनेकों का मार्गदर्शन करता है और इससे पथभ्रष्ट वह केवल उन्हीं को पाता है जो अवज्ञाकारी हाते हैं। (2:36)
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः मैं तुम सबको समान मन्त्र से अभिमन्त्रित करता हूँ। (ऋग. 10:191:3)	*कुल या यहलल् किताबि तआलौ इला कलिमतिन् सवा-इम्-बयनना व बयनकुम्* तुम कहो कि हे पूर्व ग्रन्थ वालो ! हमारे और तुम्हारे बीच जो समान मन्त्र हैं, उसकी और आओ (3:64)
वयं देवानां सुमतौ स्याम हम सत पुरुषों की शुभ मति में रहें। (अ. 6:47:2)	*व अदख़िल्नी बिरह्मति-क फी अिबादिकस्-सालिहीन* प्रभोवर ! अपनी कृपा से मुझे अपने सतपुरुषो में दाखिल कर। (27:19)
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात् । मैं उस महानतम पुरुष को जानता हूं	*या अय्युन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव-व मुबश्शिरंव्-व नजीरा व दाअियन् इलल्लाही बिइज्निही व सिराजम्-मुनीरा*

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n5/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
(जो) सूर्य रुप दीप्तिमान है, अंधकार को परास्त करने वाला है। या अहमद वेद (ब्रह्मज्ञान) है, महानतम पुरुष है सूर्यरुप दीप्तिमान, अंधकार को परास्त करने वाला है। (य. 31:18)	हे ईशदूत हमने तुम्हें गवाही देने वाला और शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला और अल्लाह के हुक्म से उसकी और बुलाने वाला दीप्तिमान सूर्यरुप बना कर भेजा है। (33:45:46) *व युखरिजुहुम् मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि बिइज़्निहि* वह अल्लाह के हुक्म से उन्हें अन्धेरों से निकाल कर उजाले की और लाता है। (5:16)
द्विता विव्रे सनजा सनीडे अयास्य: स्तवमानेभिरर्कै: । *भगो न मेने परमे व्योमन्नधारयद् रोदसी सुदंसा: ॥* ऋषियों द्वारा स्तुत्य परमेश्वर ने परस्पर जुड़े हुए प्राचीन आकाश और पृथ्वी को पृथक-पृथक किया। फिर उत्तम कर्म वाले ने सूर्य के समान उन दोनों को स्थित किया। (ऋग. 1:162:7)	*अ-व लम य-रल्लजी-न क-फ़रु अन्नस्-समावाति वलअर्-ज कानता रत्-कन् फ़-फ़तक्नाहुमा* क्या इन्कार करने वालों नें नहीं देख लिया कि यह आकाश और धरती पहले परस्पर जुड़े हुए थे फिर हमने उन्हें पृथक-पृथक किया। (21:30)
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् । प्रजापति के प्राण रुप देवताओंने पुरुष को मानसिक यज्ञ के अनुष्ठान	*व इज कुल्ना लिल्-मलाइकतिस्सजुद् लि आद-म* याद रहे कि जब हमने फ़रिश्तों से (आत्मलोक में) कहा कि (प्रथम

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n6/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
काल में वरण किया। (ऋग. 10:90:15)	पुरुष) आदम के आगे झुक जाओ (2:34)
बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रंयत्प्रैरत नामधयं दधाना: बृहस्पतिने सबसे पहले पदार्थो का नामकरण किया, वह जो प्रेरणा करते हैं वह समस्त वाणियों का अग्र है। (ऋग. 10:71:1)	*व अल-ल-म आदमल् अस्मो अ कुल्लहा* और परमेश्वर ने (सबसे पहले आत्मा लोक में पहले मनुष्य) आदम को सभी नामों का ज्ञान दिया। (2:31)
अन्वार भेथामनुसरं भथामेतं लोकं श्रद्दधाना: सचन्ते। श्रद्धा वाले लोग परलोक का ध्यान रखते हुए सत्कर्मों को निरन्तर मिलकर करते रहें। (अ. 6:122:3)	*अ-रज़ीतुम् बिल्-हयादिद्दुन्या मिनल् आख़िरति फ़-मा मताअुल्-ह यातिद् दुन्या फ़िल्आखिरति इल्ला क़लील* क्या तुम इस लोक के जीवन ही पर राज़ी हो गए हो ? इस लोक की सामग्री परलोक की अपेक्षा बहुत थोड़ी है। (9:38)
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुद: प्रमुद आसते। कामस्य यत्राप्ता: कामास्तत्र माममृतं कुधी... ॥ आनन्द और स्नेह जहां वर्तमान रहते हैं, जहां सभी कामनाएं इच्छा होते ही पूर्ण हो ज़ाती हैं उसी अमर लोक में मुझे निवास दो।(ऋग. 9:113:11)	*वफ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फ़ुसु व त-लज़्ज़ुल्-अअ-युनि व अन्तुम् फ़ीहा खालिदून* स्वर्ग में हर वह चीज़ होगी आत्माएं जिसी चाहें और आंखें जिससे लज़्ज़त पाएं। और तुम उसमें सदैव रहोगे। (43:71)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n7/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
इन्द्र क्रतुं न आ भर हे परमेश्वर तू हमें तत्वदर्शिता से भर दे। (अ. 18:3:67)	*युअतिल्-हिक्म-त मंय्यशा-उ* वह ईश्वर जिसे चाहता है तत्वदर्शिता प्रदान करता है। (2:269)
मही देवस्य सवितः परिष्टुतिः इस संसार के बनाने वाले के लिए स्तुति है। (ऋग. 5:81:1)	*अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन अर्रहमानिर्रहीम* स्तुतियों का पात्र अल्लाह ही है जो सब संसारों का प्रभु है। (1:1)
वसुर्दयामान जो देने वाला और दयावान है। (ऋग. 3:34:1)	*इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तअीन* जो असीम कृपावान और दयावान है। (1:2)
नय सुपथा राये अस्मान हमको हमारे कल्याण के लिए सद्मार्ग पर ले चल। (य. 40:16)	*इह्दिनस्-सिरात्ल्मुस्क़ीम* हे परमेश्वर हमारा सीधे रास्ते की ओर मार्ग दर्शन कर। (1:5)
महो दिवः पृथिव्याश्च सम्राट वह परमेश्वर महान आकाश लोकों व पृथ्वी का सम्राट है। *नः भवत्विद्रं ऊती* वह ईश्वर हमारी सहायता करें। (ऋग. 1:100:1)	*अ-लम् तअ्-लम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा लकुम् मिन् दुनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिव-व ला नसीर* क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और पृथ्वी का साम्राज्य अल्लाह ही के लिए है। और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई मित्र और सहायक नहीं है। (2:107)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n8/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी । समस्त सृष्टि पर सामर्थ्य रखने वाले स्वामी ने दिन और रात का भेद स्थापित किया । (ऋग. 10:190:2)	*अ-लम्त-र अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लय-लफ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-रफ़िल्लयलि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क्-म-र कुल्लुंय्यजरी इलां अ-जलिम्-मुसम्मंव्* क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और उस ने सूर्य और चन्द्रमा का वश में कर रखा है। प्रत्येक एक निर्धारित अवधि तक चलेगा । (31:29)
यदंग दाशुशेत्वमग्ने भद्रं करिष्यसि त्वेत तत् सत्यमंगिरः हे परमेश्वर आप सदाचारी को अच्छा फल देते हैं यह आपकी सद्प्रवृत्ति है। (ऋग. 1:1:6)	*निअ्-म-तम्-मिन् अिन्दिना कजालि-क नज्ज़ी मन् श-कर* यह हमारी ओर से एक वरदान है कि हम कृतज्ञ को ऐसा ही अच्छा बदला देते हैं। (54:35)
ऋतस्य पथा नमसा विवासेत मनुष्य सत्य के मार्ग पर विनम्रता पूर्वक चले । (ऋग. 10:31:2)	*इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न मुख़्तालन् फ़ख़ूरा* अल्लाह एसों को मित्र नहीं रखता जो घमन्डी और अहंकारी हैं । (4:36)
यो विश्वामि वि पश्यति भवना संच पश्यति । वह ईश्वर सारे जगत को भली प्रकार जानता है। . (ऋग. 10:187:4)	*वल्लाहु यअ्-लमु मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि वल्लाहु बिकुल्लि शयइम्न् अलीम* और अल्लाह आसमानों और धरती में जो कुछ है उसे जानता है, अल्लाह हर वस्तु का ज्ञान रखता है। (49:16)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n9/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
यस्तिष्ठति वरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतंकम । द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजातद् वेद वरुणस्तृतीयः ॥ जो खड़ा होता है, चलता है, जो धोखा देता है, जो छिपता फिरता है, जो दूसरे को कष्ट पहुंचाता है, जो दो मनुष्य खुफिया बात करते है, तीसरा ईश्वर इन सबको जानता है । (अ. 4:16:2)	*यअ-लमु सिर्रकुम् व जह-रकुम् व यअ--लमु मा तक्सिबून* वह तुम्हारी छुपी और खुली और जो कुछ भी तुम (अपने कर्मो द्वारा) कमाते हो उन सब बातों को जानता है । (6:3)
विश्वस्य मिषतो वशी यह सब प्राणियों को वश में रखता है । (ऋग. 10:190:2)	*व हुवल्काहिरु फ़ौ - क़ अिबादिही* वह अपने बन्दों पर छाया हुआ है । (6:18)
प्रजा पतिर्जनयति प्रजा इमाः परमेश्वर इन सब सृष्टियों को उत्पन्न करता है । (अ. 7:19:1)	*व ख़-ल-क़ कुल्-ल शयइन्* उसने ही हर वस्तु को पैदा किया (25:2)
यह एक इद् विदयतेवसु मर्ताय दाशुषे जो (परमेश्वर) एक है (वह) ही दानशील मनुष्य को बहुत प्रकार जीविका देता है । (ऋग. 1:84:7)	*व अन्फिकू खयरल्-लिअन्फुसिकुम्* निर्धनों पर खर्च करो इसमे तुम्हारा अपना कल्याण है । (64:16) *इन् तुक्रिजुल्ला-ह कर्-जन् ह-स-नंय्युज़ाअिफ़हु लकुम् व यग्फिर् लकुम्* यदि अल्लाह को तुम अच्छी प्रकार

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n10/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
	कर्ज़ दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ाता चला जाएगा। (64:17)
न तस्य प्रतिमा अस्ति उस परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं है। (य. 32:3)	*लय-स कमिस्लिही शयउन्* कोई वस्तु असके समरुप नहीं है। (42:11)
यस्यैमा: प्रदिश: यह सब दिशाएं उसकी हैं। (ऋग. 10:121:4)	*व लिल्लाहिल्-मश्रिकु वल्मग्रिबु* पूरब भी अल्लाह ही का है और पश्चिम भी। (2:115)
सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्ताते सविता धरात्तात संसार का सृष्टा, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे सब जगह है। (ऋग. 10:34:14) *विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो* परमेश्वर के नेत्र हर और हैं, उसका मुख हर तरफ़ है। (ऋग. 10:81:3)	*फ अयनमा तुवल्लू फ़-सम्-म वज्हुल्लाहि इन्नल्ला-ह वासिअुन् अलीम* सो तुम जिधर भी मुँह करो उदर ही अल्लाह का रुख़ है, निःसंन्देह अल्लाह बड़ा सर्व विस्तृत और जानने वाला है। (2:115)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n11/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
अद्धा देव महा ईश्वर निश्चय ही महान है। (अ. 20:58:3)	*कबीरुल्-मु-अत-आल* परमेश्वर सबसे बड़ा और आलीशान है। (13:9)
अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि ईश्वर के विधान नहीं बदलते (ऋग. 1:24:10)	*ला तब्दी-ल लिकलिमातिल्लाहि* अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ करता। (10:64)
न किरस्य प्रभिनन्ति व्रतानि ईश्वर के नियम कोई नहीं बदल सकता। (अ. 18:1:5)	*व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला* और तुम ईश्वर के विधान में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे। (48:23)
इसे चित् तव मन्यवे वे पेते भियसा मही यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वां अवधोरर्चन्ननु स्वराज्यम ॥ हे परमेश्वर ये लोक तेरे प्रताप से कांपते है। तू अपनी प्रताड़ना से दुष्कर्मी को मारता है और सत्कर्मी के लिए अपने राज्य में सत्कार करता हुआ सुख प्रदान करता है। (ऋग. 1:80:11)	*व लिल्लाहि माफ़िस्समावाति व माफ़िल्अर्जिलि-यज्जि-यल्लजी-न असाउ बिमा अमिलू व यज्ज़ि-यल्लजी-न अह-सनू बिल्हुस्ना* और आसमानों और जमीन में जो कुछ भी है अल्लाह ही की सम्पत्ति है ताकि जिन्होंने बुरे कर्म किए उन्हें बुरा बदला दे और सदाचारियों को अच्छा बदला दे। (53:31)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n12/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
सर्व तद् राजा वरुणो किचष्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात जो आकाश और पृथ्वी के बीच है या जो कुछ उससे परे है उसे ईश्वर देखता है। (अ. 4:16:5)	*यअ्-लमु मा यलिजु फ़िलअर्जि व मा यख़रुजु मिन्हा व मा यन्जिलु मिनस्समाइ व मा यअ-रुजु फ़ीहा* वह हर उस चीज़ को जानता है जो धरती में दाख़िल होती है और जो उसमें से निकलती है और उसे भी जो आसमान से उतरती है और जो वापस उसमें चढ़ती हैं। (57:4)
वेद वातस्य वर्त्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहत: । वेक्ष ये अध्यासते ॥ यह सब ओर फैले हुए वायु के गुणवान रास्तों को जानता है ओर उन सब चीजों को जानता है जो उस (वायु) पर आश्रित हैं। (ऋग. 1:25:9)	*व हुवल्लज़ीं अर्स-लरिया-ह बुश्रम्-बय-न यदय रह्मतिही* और वही है जो अपनी करुणा से पहले शुभ सूचना के रुप में हवाओं को भेजता है। (25:48)
होतारं सत्ययजं रोदस्योरुत्तान हस्तो नमसा विवासेत । पूजनीय, आकाश व पृथ्वी को सत्य के मार्ग से चलाने वाले परमेश्वर से विनम्रता पूर्वक हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना करो। (ऋग. 6:16:46)	*उद्‌ऊ रब्बुकुम् त-ज़ुर्अं व्-व ख़ुफ्य-तन् इन्नहू ला युहिब्बुल-मुअ-तदीन* तुम अपने पालनहार से विनम्रता पूर्वक चुपके, चुपके प्रार्थना किया करो। निस्ससन्देह वह सीमाओं के उल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता। (7:55)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n13/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
नू नव्यसे नीवयसे सूक्ताय साधया पथः । प्रत्नवद रोचया रुचः ॥ तू दिन-प्रतिदिन नए और उससे भी नूतनतर सुभाषित के लिए रास्ता बना और उस रास्ते को ऐसा प्रकाश का बना जैसे तुझसे पहले ऋषि बनाते आए हैं । (ऋग. 9:9:8)	*व लाकिन् तस्दीक़ल्लजी बय-ना यदयहि व तफ्सील्-किताबि ला रय-ब फ़ीही मिर्रब्बिल्-आलमीन* ....बल्कि यह कुरआन तो जो कुछ इससे पहले आ चुका उसका पुष्टिकर्ता है और (पिछले) ईश्वरीय ग्रन्थों का विस्तार है । इसमें कोई संदेह नहीं... सारे संसार के रब की ओर से है । (10:37)
पतिर्बभूथासमो जनानामेको विश्यवस्य भवनस्य राजा । यह मनुष्यों का स्वामी है जिसके समान कोई नहीं, सब लोकों का एकमात्र शासक है । (ऋग. 6:36:4)	*जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ला इला-ह इल्ला हु-व* वही अल्लाह तुम सब का स्वामी है, संपूर्ण राज्य उसी का है, कोई पूज्य उसके सिवा नहीं । (37:6)
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः । वही अग्नि, यम और मातरिश्वा है, उस एक ब्रह्म को विद्वान अनेक नामों से पुकारते हैं । (ऋग. 1:164:46)	*कुलिद्उल्ला-ह अविद्उर् रह्मा-न अय्यम्-मा तद्ऊ फ़-लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना* कह दो कि तुम अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर पुकारो । उसे जो भी कह कर पुकारो, उसके सभी अच्छे नाम हैं । (17:110)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n14/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
तस्य ते भक्तिवांसः स्याम हे प्रभो ! हम तेरे ही भक्त हों । (अ. 6:79:3)	*इय्या-क नअबुदु वइय्या-क नस्तअीन* हे रब ! हम तेरी ही बन्दिगी करते हैं और तझ से ही मदद मांगते हैं । (1:4)
तमेव विद्वान् नबिभाया मृत्योः उस आत्मा ही को जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता । (अ. 10:8:44)	*कुल् इन् कानत् लकुमुद्दारुल्-आखिरत् अिन्दल्लाहि खालिं-स-तम्-मिन्दृन्निन्नमि फ त-मन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तम् सादिकीन* कहोः अल्लाह के यहां यदि सचमुच परलोक का घर, सारे लोगों को छोड़ कर केवल तुम्हारे ही लिए है तो मृत्यु की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो । (2:94)
सं श्रुतेन गमेमहि हम ब्रह्मज्ञान से युक्त हों । (अ. 1:1:4)	*व कुल् रब्बि जिदनी अिल्मा* कहो हे रब मेरे ज्ञानमें वृद्धि कर । (20:114)
जनं मनुजातं सब मनु की संतान हैं । (ऋग. 1:45:1)	*या अय्युहन्नासु इन्ना ख़-लक़नाकुम् मिन् ज-करिव-व उन्सा* हमने तुम सब को एक पुरुष और स्त्री से पैदा किया । (49:13)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n15/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
सुगा ऋतस्य पन्था: सत्य का मार्ग सहल है। (ऋग. 8:31:13)	*मा अन्ज़ल्ला अलैकल-कुरआ-न लितश्का-* हमने तुम्हें कठिनाई में डालने के लिए नुकशान तुम्हारी ओर नहीं उतारा। (20:2)
ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृत: सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नहीं कर पाते। (ऋग. 9:73:6)	*व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तखिज़ूहु सबीलन्* यदि वे (दुष्कर्मी) सद्मार्ग देख भी लें तो भी वे उसे मार्ग नहीं बनाएंगे। (7:146)
न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा: बिना परिश्रम किए देवों की मैत्री नहीं मिलती। (ऋग. 4:33:11)	*अम् हसिब्तुम् अन् तद्खुलुल-जन्न-त व लम्मा यअ् लमिल्लाहुल्लजी-न जाहदू मिन्कुम व यअ-ल-मस्साबिरीन* क्या तुमने यह समझ रखा है कि स्वर्ग में प्रवेश करोगे जबकि अल्लाह ने अभी उन्हें तुम में से विभावित ही नहीं किया जिन्होंने परिश्रम किया और जो धर्यम्वान हैं। (3:142)
शंन: कुरु प्रजाभ्य: प्रभु ! हमारी संतान का कल्याण करो। (य. 36:22)	*व अस्लिह ली फी जुर्रिय्यती* हे प्रभु ! मेरे लिए मेरी सन्तान में भलाई रख दे। (46:15)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n16/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
त्वंनो अन्तम उत त्राता तू हमसे अत्यन्त समीप और रक्षक है। (ऋग. 5:24:1)	*व नह्नु अक्-रबु इलयहि मिन् हब्बिल्-वरीद* और हम तो उस (इन्सान) की श्वास नली से भी अधिक उसके निकट है। (50:16)
न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः । नोत स्ववृष्टिं अस्य युध्यत एको अन्यच् चकृषे विश्वमानुषक ॥ न पृथ्वी और आकाश उस परमेश्वर की व्यापकता की सीमा को पा सकते हैं और न अन्य ग्रह, और न आकाश से बरसने वाली वर्षा। उस एक के सिवाय कोई दूसरा इस जगत पर सामर्थ्य नहीं रखता। (ऋग. 1:52:14)	*वलायुहीतू-नबिशैइम्मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज* और वे लोग उसके ज्ञान के किसी भाग का व्यापक आभास नहीं कर सकते सिवाय उतने के जो वह स्वयं चाहे। उसका सामार्थ्य आकाशों और पृथ्वी पर विस्तृत हैं। (2:225) *व युनज़्ज़िलुल्-ग़य-स* और वही वर्षा उतारता है। (31:134)
वेद नाव समुद्रियः वह समुद्र की नौकाओं को जानता है। (ऋग. 1:25:7)	*अ-लम् त-र अन्नल्फुल्-क तज्री फ़िल्बहिर बिनिअ-मतिल्लाहि* क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के वरदान से नौका समुद्र में चलती है। (31:31)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n17/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
अध: पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर। मा ते काशप्लकौ दृशन स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ ॥ (जब) स्त्री ही पुरुष बन गई हो (अर्थात जब पुरुष के समान घर से निकले तो) नीचे देख, उपर नहीं। दोनों पावों को समेट कर चल कि तेरे निम्नांग नजर न आएं। (ऋग. 8:33:19)	*वकुल्लिल्-मुअमिनाति यग्-जुजु-न मिन् अब्सारिहिन-न व यह-फ़ज़्न फ़रुजहुन-न वला युब्दी-न ज़ी-न-तहुन-न* ईमान वाली स्त्रियों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी लज्जा इन्द्रियों की रक्षा करें और अपना श्रृंगार न दिखाएं सिवाय उसके जितना ज़ाहिर हो ही जाता है और अपने सीनों पर अपनी ओढनियों के आंचल डाले रहें। (24:31)
असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृता:। ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना: ॥ जो मनुष्य जीते हुए अपनी आत्मा का हनन करते हैं वे मरने के पीछे अंधकारमय असुरों के लोक को जाते हैं। (य. 40:3)	*वला तफ्तुलू अन्फुसकुम्* अपने प्राणों को हलाकत में न डालो। (4:29)
यो मारयति प्राणयति यस्मात प्राणन्ति भुवानानि विश्वा। जो (परमेश्वर) मारता है और प्राण प्रदान करता है और जिस (की कृपा) से सभी जीव जीवित रहते हैं। (अ. 13:3:3)	*अल्लाहुल्लज़ीख़-ल-क़कुम् सुम्-मर-ज-ककुम सुम-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम्* अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर उसने तुम्हें रोजी दी, फिर तुम्हे मौत देता है, फिर तुम्हें जीवित करेगा। (30:40)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n18/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
दृष्ट्वा रुपे व्याकरोत्सत्या नृते प्रजापतिः । अश्रद्धा मनृतो अदधाच्छ्द्धाँ सत्ये प्रजापतिः । परमेश्वर ने सत्य और मिथ्या के रुप को अपनी ज्ञान दृष्टि से अलग अलग कर दिया और आदेश दिया कि सत्य में आस्था लाओ और मिथ्या को ठुकरा दो। (य. 19:77)	*कत्तबय्यनुर्रुश्दु मिल्गय्यि मंय्यकफुर बित्तागूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़-कदिस्तम्-स-क बिल्-अुर्वविल्-वुस्का* सद्मार्ग, को गुमराही से अलग स्पष्ट कर दिया गया तो अब जो कोई दानव को ठुकरादे और अल्लाह पर आस्था लेआए उसने बड़ा प्रबल सहारा थाम लिया। (2:256)
उत त्वः पश्यन्त ददर्श वाचमुत त्वः श्रृण्वन्न श्रुणोत्ये नाम । बुद्धि हीन लोग ग्रन्थ देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सनते। (ऋग. 10:71:4)	*वलहुम् अअ्-युनुल-ला-युब्सिरु-न बिहा व लहुम्आजानुल्-ला-यस्मअू-नबिहा-उलाइ-क कॅल्अन्आमि बल हुम अजल्लु* और उनके पास आंखे है वे उनसे देखते नहीं और उनके पास कान है वे उनसें सुनतें नहीं, वे पशुओंकी तरह हैं। (7:179)
महेचन त्वामद्रिवः पराशुल्काय देयाम । न सहस्राय नायुताय बज्रिवो न शताय शतामध ॥ हे सदाशक्तिमान परमेश्वर तू इतना मूल्यवान है कि में तुझको किसी शुल्क के लिए भी नहीं छोड़	*व ला तश्तरु बि आयाती स-म-नन् कलीलंव्* और थोडे मूल्य पर मेरी "आयतों" को न बेचो और मेरा डर रखो। (2:41)

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n19/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
सकता। न हजारों के लिए न अरबों के लिए और न सैंकड़ो सांसारिक भोगों के लिए। (ऋग. 8:1:5)	
स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व तू ही कर्म कर और तू ही उसका फल भोग। (य. 3:15)	*अल्ला तजिरु वाजिरतु वविज्-र उखरा* और यह कि कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। (53:38)
क्रत्वः समहदीनता प्रतीपं जगमा शुचे मृला सुक्षत्र मृलय॥ हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर हम अपनी अज्ञानता से पथभ्रष्ठ होते हैं। हम पर कृपा करें। (ऋग. 7:89:3)	*इन्नल्ला-ह ला यज्लिमुन्ना-स यशअंव्-व ला किन्नन्ना-स अन्फुसहुम् यज्लिमून* निःसंदेह अल्लाह मनुष्यों पर कुछ जुल्म नहीं करता किन्तु लोग स्वयं अपने आप पर जुल्म करते हैं। (10:44)
केवलागो भवति केवलादी जो अपनी कमाई अकेला खाता है वह पाप खाता है। (ऋग. 10:117:6)	*लन्तनालुल्बिर्र-र हत्ता तुन्फिकू मिम्मा तुहिब्बून* तुम नेकी के दरजे को नहीं पहुंच सकते जब तक कि अपनी उन चींजों में से न खर्च करो जो तुम्हें प्रिय हैं। (3:92)
सइद् भोगो यो गृहवे ददात्यन्न कामाय चरते कृशाय। अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम॥	*वज्ज़रा-इ वल्का अिमीनल्-गय-ज वल्आफ़ि-न अनिन्नासि वल्लाहु युहिब्बुल-मुहिसनीन*

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk685/page/n20/mode/1up

realpatidar.com

वेद	कुरआन
जो निर्धनों और अभाव से पीड़ितों की सहायता के लिए दान करता है उसका भला होता है, उसके शत्रु भी उसके मित्र बन जाते हैं। (ऋग. 10:117:3)	यह वे लोग हैं जो समृद्धि एवं निर्धनता प्रत्येक अवस्था में खर्च करते रहते हैं, और क्रोध को रोकने वाले हैं, और लोगों को क्षमा करने वाले हैं, और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है। (3:134)
य आधाय चकमानाय पित्वो अन्नवान्त्सन् सफितायो पजरग्भुषे। स्थिरंमनः कृण्णुते सेवते पुरोतो चित्स मर्डितारं न विन्दते॥ जो दुर्बल, अन्न के चाहने वाले, दरिद्रता से पीड़ित को, अन्न होते हुए भी सहायता नहीं देता उसको कष्ट आने पर कोई सुख नहीं मिलता। (ऋग. 10:117:2)	*फ़-जालिकल्लजी यदुअ-अुल-यतीम व ला यहुज्जु अला तआमिल्-मिस्कीन फवयलुल-लिल्मुसल्लीन* वही तो है जो अनाथ को धक्के देता है और निराश्रित को काना खिलाने पर नहीं उकसाता। सो तबाही है ऐसे नमाजियों के लिए। (107:2,3,4)

चेतावनी

इस पुस्तिका में दो ईश्वरीय ग्रंथो के उद्धरांश प्रस्तुत किये गये हैं। इसे आदरपूर्वक सम्मान से रखना आपका कर्तव्य है। निरादरपूर्ण तरीके से इधर उधर फेंकना ईश्वरीय प्रकोप एवं बेबरकती का कारण भी बन सकता है।

realpatidar.com

realpatidar.com

वेद	कुरआन
यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । जो हमारा पालक एवं उत्पन्न करने वाला है जो विधाता है वही जगत के सब स्थानों और लोकों को जानता है । (ऋ. 10:82:3)	*अम्मय्यब्दउल्-खलक-सुम-म युअीदुहू व मृय्यर्ज़ुकुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्जि* कौन है वह जो सृष्टि का प्रारंभ करता है और फिर उसे लौटाता है । और कौन तुम को आकाश व पृथ्वी से जीवीका देता है ? (कुरआन 27:64) *कुल ला यअ-लमु मन् फिस्समावाति वल्अर्जिल्गयब इल्लल्लाहु ।* इनसे कहो कि अल्लाह के सिवाय आकाशों व पृथ्वी में कोई ढकी छिपी बातों का ज्ञान नहीं रखता । (कुरआन 27:65)
सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णा दस्कम्भने सविता द्यामदृहत् । परमेश्वर ने अपने यंत्रो से पृथ्वी को नियन्त्रित किया और सहारे के बिना आकाश को अधर में स्थापित किया । (ऋग. 10:149:1)	*ख-ल-कस्समावाति बिगयरि अ-मदिन् तरौनहा व अल्का फिल् अजि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम* उसने आकाशोंको पैदा किया बिना ऐसे स्तंभो के जिन्हे तुम देख सको और पृथ्वी में पर्वत स्थापित कर दिए ताकि वह तुम सहित असन्तुलित न हो जाए... (कुरआन 31:10)

realpatidar.com